ॐ श्री शारदा भगवत्यै नमः

श्री शारदा
सहस्रनामस्तोत्रम्
॥ नामावलीसहितम् ॥



प्रकाशक
स्वामी गोविन्दानन्द
श्री शारदा मन्दिर
कलूसा
बांडीपुर, कश्मीर

कीमत २-००

चांद प्रैस जम्मू



ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ परमगुरवे नमः, परं देवतायै नमः

ॐ श्री पंचाक्षरी शारदा भगवत्यै नमः



शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमाद्यां जगद्व्यापिनीम् ।
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

विषय सूची

प्राक्कथन

प्रस्तुत शारदा सहस्रनाम श्री गोविन्दानन्द बाबा जी के भरसक प्रयत्नों के फलस्वरूप छप सका है । बाबा जी श्री शारदा-मन्दिर कलूसा में कई वर्षों से रह रहे हैं और मन्दिर की व्यवस्था संभाले हुए हैं । अपनी आस्था और लगन के कारण ये कलूसा में सर्व प्रिय हैं ।

बावा जी की प्रबल इच्छा थी कि समय समय पर शारदा-सहस्रनाम द्वारा मन्दिर में अर्चना की जाए, पर यह पावन ग्रन्थ कश्मीर में लुप्त सा हो गया था । उधर दैव योग से श्री सर्वानन्द कलूसा निवासी, शारदा सहस्रनाम प्राप्त करके छपवाने के इच्छुक थे । अतः इन दोनों की बलवती इच्छा के फलस्वरूप, शारदा लिपि मे लिपिबद्ध एक हस्त लिखित सहस्रनाम स्तोत्र की प्रति के विषय में इन्हे पता चला जो शारदा लिपि में लिपिबद्ध एक सहस्रनाम स्तोत्र की प्रति श्री नारायण जी अन्दरहामा निवासी के सहयोग से प्राप्त हुई और उसकी प्रतिलिपि देवनागरी लिपि में, लक्ष्मण जू पुरोहित की सहायता से बनाई गई है । वह श्री लक्ष्मण जू पुरोहित के पास है श्री सर्वानन्द जी ने इस स्तोत्र को देवनागरी लिपि में लिखने का प्रयास किया । श्री लक्ष्मण जू देमनागरी लिपि से अनभिज्ञ हैं और श्री सर्वानन्द जी शारदा लिपि से । अतः प्रति लिपि लिखते समय उच्चारण दोष के कारण तथा संस्कृत भाषा पर अकधिार न होने के कारण स्तोत्र में बहुत सी अशुद्धियां आ गईं । बिना एक विज्ञ संस्कृत विद्वान् की सहायता के, यह स्तोत्र पूर्ण रूपेण शुद्ध रूप में छपवाना कठिन काम था । बावा जी ने भगवती की प्रेरणा पाकर शोध कार्य बिना

ही ज्यों का त्यों स्तोत्र छपवाया और इसे बांटना आरम्भ किया। मुझे भी एक प्रति मिली और मैंने देखा कि यह स्तोत्र सर्वथा अशुद्ध रूप में छपवाया गया था। तब मैंने यह प्रति जम्मु निवासी श्री राम कृष्ण शास्त्री जी "अव्यय", संपादक संस्कृत मासिक-पत्रिका "सुप्रभातम्", को भेज दी और उन्हें अनुरोध किया कि इस सहस्त्रनाम का शोध कार्य करें। फलस्वरूप श्री शास्त्री जी ने इस स्तोत्र का संशोधन किया और इसको सब त्रुटियों का निवारण करके वापस भेज दिया। कश्मीर निवासी भक्त, साधकगण, विशेष कर कलूसा निवासी, मैं और बावा जी, सभी श्री शास्त्री जी के बड़े आभारी हैं, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर शोध कार्य किया और सहस्त्रनाम छपवाने में भी सहायता की।

इतिहास प्रसिद्ध शारदा पीठ, जहां जगद्गुरु श्री आदि-शङ्कराचार्य ने शास्त्रार्थ करके मन्दिर का दक्षिण द्वार खुलवाया था, अब पाकिस्तान में है। इसी पीठ के देवस्थान बारामूला जिला में कई स्थानों पर हैं, जिनमें कलूसा तथा कलशपुर का देवस्थान सर्व प्रमुख है। कलूसा, बांडीपुर नगर का समीपवर्ती एक गांव है।

किंवदन्ती के अनुसार कलूसा में शारदा भगवती एक दूध के कुण्ड के रूप में प्रकट हुई थी। कलूसा के उत्तरी छोर पर लगभग १६ चश्मे हैं, जो सभी प्राय: भग्न-अवस्था में हैं। फिर भी इनका जल चश्मा शाही तथा कुक्कड़ नाग जैसा ही ठण्डा, स्वादिष्ट, पाचक तथा स्वच्छ है। इनमें से कौन सा मूल शारदा नाग है, यह कहना कठिन है। आज से तीस पैंतीस वर्ष पूर्व, एक चश्मे से एक मेरु प्राप्त हुआ था, जो लगभग तीन फुट ऊंचा है और उस पर एक सुंदर तथा भव्य मूर्ति गड़ी हुई है। मेरु मन्दिर के शिवालय में वृक्ष के तने के पास ही स्थापित किया गया है।

जिन्होंने यह मेरु, चश्मे से निकाला, उनका कहना है कि मेरु के नीचे एक विशालकाय समतल शिला थी, जो चश्मे के ऊपर ढ़क्कन-सी थी, जिसको निकाला न जा सका। इस चश्मे को गांव को लोग कलाय नाग कहते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि मूल शारदा मन्दिर, वर्तमान मन्दिर के व्रण वृक्ष से लेकर एक ओर कलाय नाग तक और दूसरी ओर नाथपुर (सम्भवतः यह स्थान नाथ पंथी योगियों का डेरा था। १६ चश्मों में से एक को अब भी जोगी नाग कहते हैं)। तथा राथरपुर (राठौरपुर) तक के घेरे में रहा होगा। समय के थपेड़ों तथा दैव इच्छा से यह सिद्धपीठ अब वृक्ष के आस पास तक ही सीमित रह गया है।

मन्दिर के द्वार पर विशालकाय वृक्ष है। ऐसा लगता है कि कभी यह पांच वृक्षों का समूह रहा होगा जो मिल कर एक वृक्ष के रूप में परिणत हो गये हैं। इस तथ्य क आधार पर कहा जा सकता है कि वृक्ष के पास वाले शिवालय में शिवलिंग के स्थान पर पंचमुण्डी आसन रहा होगा; जहां पर तांत्रिक विधि से शक्ति उपासना की गई होगी। पचमुण्डी आसन पर पांच वृक्षों की छाया में तांत्रिक विधि से शक्ति उपासना का विधान है। अब इस स्थान पर शिवालय है, जिसमें एक शिवलिङ्ग, एक मेरु (जो कलाय नाग से प्राप्त हुआ है) तथा नागर्जुन की मूर्ति उल्लेखनीय है। आगे जाकर शारदा मन्दिर हैं। इस मन्दिर में दो पिण्डियां हैं एक पुरुषरूप तथा दूसरी स्त्री रूप। कश्मीर में क्षीर भवानी आदि-प्रसिद्ध सिद्ध पीठों मे दो पिण्डियों की शक्तिपीठों में स्थापना का विशेष अभिप्राय परमात्मा के अर्धनारीश्वर रूप की अभिव्यक्ति ही है।

दीर्घ समय पर्यन्त स्थान की सीमा संकुचित होने पर भी इस देवस्थान की महिमा और इसका चमत्कारिक महत्व बराबर बना है। प्रत्येक कामार्थी यहां अपनी मनोकामना पाता है। यह इस पीठ की प्रेरणा ही है, कि प्रस्तुत सहस्रनाम जनता के सामने लाना सम्भव हो गया है। आशा है कि साधक इसका पूरा लाभ उठायेंगे।

शारदा सहस्त्रनाम का पाठ करने से पहले देवी के स्वरूप को जानना श्रेयस्कर है। शारदा रूप में आद्यादेवी बुद्धि तथा ज्ञान की अधिष्ठात्री हैं। तत्व से देवी परब्रह्म परमात्मा की परा तथा अपरा शक्ति का ही स्वरूप है, जो प्रत्येक पदार्थ में व्याप्त है। परमात्मा एक है और सर्वशक्तिमान् तथा सर्वव्यापक है। फिर भी भिन्न-२ कार्यों की सिद्धि के लिये शक्ति के भिन्न-२ रूपों की उपासना उपयुक्त बताई गई है। निष्काम साधक के लिये देवी के व्यापक रूप को तत्व से जानना आवश्यक है और तत्त्वज्ञानार्थी के लिये शारदा शक्तिरूपा का प्रणिधान सहायक रहा है। इस कारण परम्परा से कश्मीर में शारदा उपासना पर अधिक बल दिया गया है। इस परम्परा से ही कश्मीर के जन समुदाय में अधिक बौद्धिक विकास पाया जाता है। इस विकास का प्रयोग अच्छे अथवा बुरे कार्यों में करने के लिये व्यक्ति विशेष स्वयं जिम्मेदार है और कर्मानुसार फल पाता है, फिर भी यह सर्वत्र मान्य है कि कश्मीर निवासी प्राचीन काल से ही प्रखर बुद्धि वाले रहे हैं। जगदम्बा शारदा की इन पर विशेष कृपा है।

शारदा सहस्रनाम की एक यह विशेषता है कि इसमें वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण पर नामों की रचना की गई है। वर्ण मूलतः ध्वनियां हैं, जो हमारे बृहत् मस्तिष्क (सहस्रार) में निहित हैं। ये ध्वनियां क्रमशः षट्चक्रों में विभाजित हैं और नाड़ियों द्वारा मनुष्य के

प्रत्येक अङ्ग में प्रवहमान हैं। प्रत्येक ध्वनि का अपना स्वरूप है, जिसको आधुनिक यन्त्रों द्वारा देखा और मापा जा सकता है। ऋग्वेद का आदेश है कि प्रत्येक ध्वनि मन्त्र है तथा प्रत्येक वनस्पति (पौधा) औषध। हमारे ऋषि प्रत्येक वर्ण–ध्वनि के स्वरूप तथा शक्ति के ज्ञाता थे। अतः उन्होंने ध्वनियों के मिलाप से मन्त्र-रचना की। उनके अलग स्वरूपों का तथा उनकी शक्ति का सविस्तार वर्णन किया। इन मन्त्रों के बार बार उच्चारण तथा इनके स्वरूप के ध्यान की प्रतिष्ठा से मन्त्र-स्वरूप देवता का स्थूल रूप में आभासित होना कोई विशेष चमत्कार नहीं अपितु एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा साधक आध्यात्मिक बल तथा अभीष्ट फल की प्राप्ति करता है। इसलिये देवी को वर्णमाला स्वरूपा तथा मन्त्र-स्वरूपा कहा गया है, जो पंचस्तवी के लघुस्तव के इस श्लोक से स्पष्ट है।

आ-ई पल्लवितैःपरस्परयुतै द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः।
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः।
नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते।
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥

परमात्मा का अस्तित्व जड़ तथा चेतन पदार्थों में एक सा व्याप्त है और इन पदार्थों में निहित शक्ति ही संसार के सृजन पालन तथा संहार का चक्र चलाती है। शङ्करभगवत्पाद ने इसी तथ्य को लेकर सौंदर्यलहरी का आरम्भ इस श्लोक से किया है :—

"शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।
न चेदेवं देवो न खलु कुशलःस्पन्दितुमपि॥"

नाम, रूप, स्वरूप और शक्ति अभेद्य हैं। अतः शक्ति उपासना उसी परब्रह्म परमात्मा की ही उपासना है, जो अजन्मा

है, नित्य है, शाश्वत है, व्यापक है, सुन्दर है और आनन्दमय है, जिसका वाचक प्रणव है तथा जिसके व्यापक नाम पंचस्तवी के ऊपर लिखित श्लोक में बीस हजार बताये गये हैं, जिसकी उपासना के लिये ऋषियों ने सप्तकोटि मन्त्रों का संकलन किया है। त्याग तप, ज्ञान योग, कर्म, यज्ञ-होम, मूर्तिपूजा तथा भक्ति—संकीर्तन द्वारा जो आराध्य है और जिसकी उपासना-विधियां विभिन्न धर्मों, मतों और सम्प्रदायों ने समय तथा वातावरण की भिन्नता के अनुरूप भिन्नरूपों से बताई हैं। शारदा सहस्रनाम उक्त बीस हजार नामों और सात करोड़ मन्त्रों का एक महत्व-पूर्ण अङ्ग है। जिसका विधिवत् पाठ ज्ञानप्रद और बुद्धिप्रद है, साथ ही यह ईश्वर प्रणिधानमें सहायक है।

बावा जी का दो अढ़ाई मास से लगातार आग्रह रहा कि मैं परम पावन शारदा सहस्रनाम स्तोत्र का प्राक्कथन लिखूं। अपनी अल्पज्ञता तथा विषय की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुये मुझे इस गूढ़ विषय पर लिखने की हिम्मत न पड़ती थी। परन्तु बावा जी का आग्रह इतना स्पष्ट, जोरदार तथा वात्सल्य-पूर्ण था कि मैं कुछ शब्द यथा शक्ति लिखने की प्रेरणा पा ही गया। यह प्रयास एक शिशु द्वारा छाया पकड़ने के प्रयास के समान ही है। जगज्जननी के विषय में उसके एक अबोध शिशु का तुतलाना क्षम्य है।

श्रावण शुक्लपक्ष तीज,
मंगलवार १८ जुलाई,
सन् १९७७ ई०

ब्रजनाथ तिकू,
एम. ए. (आनर्स) बी.-एड
बड-चोटा बाजार, करणनगर;
श्रीनगर (काश्मीर)

ॐ

श्री शारदासहस्त्रनामस्तोत्रम्

ओं श्री गणेशाय नमः । श्री देवी शंकरी जयतु ।

भैरव्युवाच :—

ओं भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वलोक नमस्कृत ।
सर्वागमैकतंत्रज्ञ तत्त्वसागर पारग ॥ १ ॥
कृपा परोऽसि देवेश शरणागतवत्सल ।
पुरा मह्यं वरो दत्तो देवदानव संगरे ॥ २ ॥
तमद्य भगवंस्त्वत्तो याचेऽहं परमेश्वर ।
प्रयच्छ त्वरितं शम्भो यद्यहं प्रेयसी तव ॥ ३ ॥

श्री भैरव उवाच :—

देवदेवी पुरा सत्यं सुरासुरणाजिरे ।
वरो दत्तो मया तेऽद्य वरं याचस्व वांछितम् ॥ ४ ॥

श्री भैव्युवाच :—

भगवान् या महादेवी शारदाख्या सरस्वती ।
कश्मीरायां स्वतपसा शांडिल्येनावतारिता ॥ ५ ॥
तस्य नाम सहस्त्र मे भोगमोक्षैक साधनम् ।
साधकानां हितार्थाय वद त्वं परमेश्वर ॥ ६ ॥

श्री भैरव उवाच :—

रहस्यमेतदखिलं देवानां पर्वतात्मजे ।
परापर रहस्यं च जगतां भुवनेश्वरि ॥ ७ ॥
या देवी शारदाख्येति जगन्माता सरस्वती ।
पंचाक्षरी च षट्कूटा त्रैलोक्य प्रथिता सदा ॥ ८ ॥
तया ततमिदं विश्वं तया संपाल्यते जगत् ।
सैव संहरते चांते सैव मुक्ति प्रदायिनी ॥ ९ ॥

देवदेवी महाविद्या परातत्वैकरूपिणी ।
तस्या नाम सहस्त्रं ते वक्ष्येऽहं भक्तिसाधनम् ॥ १० ॥
त्रिवर्ग फलदं गाप्यं साधकेष्ट प्रदायकम् ॥११ ॥

अस्य श्री शारदा भगवती सहस्त्रनाम स्तोत्रस्य श्री भगवान् भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री पंचाक्षरी शारदा भगवती देवता क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकं, त्रिवर्ग साधनार्थे परमार्थ सहस्त्रनामस्तवराजपाठे विनियोगः

अथ ऋष्यादि न्यास :—

श्री भगवान् भैरव ऋषये नमः, शिरसि ।
त्रिष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे ।
श्री पंचाक्षरी शारदा भगवती देवतायै नमः, हृदि ।
क्लीं बीजाय नमः पादयोः ।
ह्रीं ~~ह्स्रीं~~ शक्तये नमः, गुह्ये ।
ॐ ह्रीं ~~ओं ह्स्रीं~~ क्लीं नमः सर्वाङ्गेषु ।

अथ करन्यास :—

ॐ ह्रां ~~ओं ह्स्रां~~ क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं ~~ओं ह्स्रीं~~ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ ह्रूं ~~ओं ह्स्रूं~~ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रैं ~~ओं ह्स्रैं~~ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ओं ह्रौं क्लौं कनिष्काभ्यां नमः ।
ओं ह्रः क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादि न्यास :—

ओं ह्रां क्लां हृदयाय, नमः ।
ओं ह्रीं क्लीं शिरसे, स्वाहा ।
ओं ह्रूं क्लूं शिखायै, वषट् ।
ओं ह्रैं क्लैं कवचाय, हुं ।

ॐ ह्लौं क्लौं नेत्र—त्रयाय वौषट् ।
ॐ ह्लः क्लः अस्त्राय फट् ।

प्राणायामं कुर्यात्

अथ ध्यानम् :—

शक्तिचापशरघंटिका सुधा पात्ररत्न कलशोल्लसत्करा ।
पूर्णचन्द्रवदना त्रिलोचना शारदा भवतु सर्वसिद्धिदा ॥

श्री शारदायै विद्महे, ह्लीं वरदायिन्यै धीमहि, क्लीं मोक्ष-दायिनी प्रचोदयात् ।

ॐ ह्लीं क्लीं शारदा शांता श्रीमती श्रीः शुभंकरी ।
शुभा शांता शरद्बीजा श्यामिका श्यामकुंतला ॥१॥
शोभावती शशांकेशी शातकौम्भ प्रकाशिनी ।
प्रताप्या तापिनी ताप्या शीतला शेषशायिनी ॥२॥
श्यामा शान्तिकरी शांतिः श्रीकरी वीरसूदिनी ।
वैश्या वेशकरी वैश्या वानरी वेशमानिला ॥३॥
वाचाली शुभगा शोभ्या शोभमाना शुचिस्मिता ।
जगन्माता जगद्धात्री जगत्पालनकारिणी ॥४॥
ह्रारिणी गदिनी गोवा गोमती जगदाश्रया ।
सौम्या याम्या तथा काम्या वाम्या वाचामगोचरा ॥५॥
ऐन्द्री चैंद्रीकला कान्ता शशिमंडलमध्यगा ।
आग्नेयी वारुणी वाणी करुणा करुणाश्रया ॥६॥
नैऋती ऋतरूपा च वायवी वाग्भवोद्भवा ।
कौबेरी कूबरी केला कामेशी कामसुन्दरी ॥७॥
ऐशानी कोशिनी कारा मोचिनी धेनुकामदा ।
कामधेनुः कौलालेशी कपालकरसंयुता ॥८॥

चामुण्डा मूल्यदा मूर्ति मुंडमालाविभूषणा ।
सुमेरुतनया वंद्या चंडिका चंडसूदिनी ॥ ९ ॥
चंडांशुतैजसी मूर्ति श्चंडेशी चडविक्रमा ।
चाटुका चाटुकी चर्च्यी चारु हंसा चमत्कृतिः ॥ १० ॥
ललज्जिह्वा सरोजाक्षी मुंडस्त्रङमुण्डधारिणी ।
सर्वानन्दमयी स्तुत्या सकलानन्दवर्धिनी ॥ ११ ॥
धृतिः कृतिः स्थितिः शान्तिःसुत्रासा चारुहासिनी ।
रुक्मांगदा रुक्मवर्णा रुक्मिणी रुक्मभूषिता ॥ १२ ॥
कामदां मोक्षदानंदा नारसिंही नृपात्मजा ।
नारायणी नरोत्तुंगा नागिनी नगनन्दिनी ॥ १३ ॥
नागश्री गिरिजा गुह्या गुह्यकेशी गरीयसी ।
गुणाश्रया गुणातीता गजराजोपरिस्थिता ॥ १४ ॥
गजाकारा गणेशानी गणगंधर्वसेविता ।
दीर्घकेशी सुकेशा च पिंगला पिंगलालका ॥ १५ ॥
भवदा भवभव्य च भवानी भवतोषिता ।
भवालस्या भद्रधात्री भीरुडा भगमालिनी ॥ १६ ॥
पौरंदरी परंख्यातिः पुरन्दर समर्चिता ।
पिनाककीर्तिकृत्कीर्तिः केयूराहढ्या महाकचा ॥ १७ ॥
घोररूपा महेशानी कोमला कोमलालका ।
कल्याणकामना कुन्ता कनकांगदभूषिता ॥ १८ ॥
कीनाश वरदा काली महामेधा महोत्सवा ।
विरूपा विश्वरूपा च विश्वधात्रा पिलंपिला ॥ १९ ॥
पद्मावती महापुण्या पुण्यापुण्यजनेश्वरी ।
जह्नुकन्या मनोज्ञा च मानसी मनुपूजिता ॥ २० ॥
कामरूपा कामकला कमनीया कलावती ।
वैकुण्ठपत्नी कमला शिवपत्नी च पार्वती ॥ २१ ॥
काश्यपी गारुडी विद्या विश्वसूर्वीश्सुद्युति :

माहेश्वरी वैष्णवी च ब्राह्मी ब्राह्मणपूजिता ॥ २२ ॥
मान्या मानवती धन्या धनदा धनदेश्वरी ।
अपर्णा शिथिला पर्णा पर्णशाला परंपरा ॥ २३ ॥
पद्माक्षी नीलवस्त्रा च निम्रा नील पताकिनी ।
दयावती दयाधीशा धैर्यभूषणभूषिता ॥२४॥
कुलेऽथ मल्लहन्त्री च बलहस्ता भलापहा ।
कौमुदी चैव कौमारी कुमारी कुमुदाकरा ॥२५॥
पद्मिनी पद्मनयना कुलजा कुल कौलिनी ।
कराला विकरालाक्षी विस्रम्भा दुर्दुराकृतिः ॥२६॥
वनदुर्गा सदाचारा सदा शांता सदा शिवा ।
सृष्टिः सृष्टिकरी साध्वी मानुषी देवकीद्युतिः ॥२७॥
वसुदा वासवी वेणुर्वाराही चापराजिता ।
रोहिणी रमणा रामा मोहिनी मधुराकृतिः ॥२८॥
शिवाशक्ति र्महाशक्तिः शांकरी टंकधारिणी ।
शंक कंकल मालाढ्या लंका कंकणभूषिता ॥२९॥
दैत्यपाशहरा दीप्ता दामोज्वल कुचारुणा ।
क्षांतिः क्षेमंकरी बुद्धिर्बोधाचार परायणा ॥३०॥
श्री विद्या भैरवी विद्या भारती भयघातिनी ।
भीमा भीमरवा भैमी भंगुरा क्षणभङ्गुरा ॥३१॥
जित्या पिनाकभूःसैन्या शंखिनी शंखरूपिणी ।
देवांगना देवमान्या दैत्यभूर्दैत्यसूदिनी ॥३२॥
देवकन्या च पौलोमी रतिः सुन्दरदोस्तटी ।
सखिनी शाकिनी शाकी सर्वसौख्य विवर्धिनी ॥३३॥
लोला लीलावती सूक्ष्मा स्थूलसूक्ष्मागतिर्मतिः ।
वरेण्या वरदा वेणी शरण्या शरचापिनी ॥ ३४ ॥
उग्रकाली महाकाली महाकालसमर्चिता ।
ज्ञानदा योगिध्येया च गोवल्ली योगवर्धिनी ॥ ३५ ॥

पेशला मधुरा माया विष्णुमाया महोज्ज्वला ।
वाराणसी तथावंती कांची कुरुक्षेत्रभूः ॥ ३६ ॥
अयोध्या योग सूर्या या यादवेशी यदुप्रिया ।
यमहर्त्री च यमदा यामिनी योगवत्तरुः ॥ ३७ ॥
भस्मोज्ज्वला भस्मशय्या भस्मकाली चितार्चिता ।
चन्द्रिका छलिनी शिल्पा आसिनी चन्द्रवासिता ॥ ३८ ॥
पद्महस्ता च पीता च पाशिनी पाशमोचिनी ।
सुधा कलशहस्ता च सुधा मूर्तिः स्वधामयी ॥ ३९ ॥
व्यूहायुधा वरारोहा वरधात्री वरोत्तमा ।
मांसाशना महाधूर्ता मोहदा मधुराम्भरा ॥ ४० ॥
मधुपा माधवी माल्या मल्लिका कालिका मृगी ।
मृगाक्षी मृगराजस्था केशकीनाशघातिनी ॥ ४१ ॥
रक्ताम्बरधरा रात्रिः सुकेशी सुरनायिका ।
सौरभी सुरभिः स्वक्षी स्वयंभू कुसुमार्चिता ॥ ४२ ॥
अम्बा जृम्भा जटाभूषा [redacted] जटिनी जूटिनी नटी ।
परमानन्दजा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कामेष्ट वर्धिनी ॥ ४३ ॥
रौद्री रुद्रस्तनारुद्धा शतरुद्रा च शांभवी ।
श्रविष्ठा शितिकंठेशी विमलानन्दवर्धिनी ॥ ४४ ॥
कपर्दिनी कल्पलता महाप्रलयकारिणी ।
महाकल्पान्तसंहृष्टा महाकल्प क्षयंकरी ॥ ४५ ॥
संवर्ताग्निप्रभा सेव्या सानन्दानन्दवर्धिनी ।
सुरसेनावसारेशी सुराक्षी वा वरोत्सुका ॥ ४६ ॥
प्राणेश्वरी पवित्रा च पावनी लोकपावनी ।
लोकधात्री महाशुक्ला शिशिराचलकन्यका ॥ ४७ ॥
तमोघ्नी ध्वांतसंहर्त्री यशोदा च यशस्विनी ।
प्रद्योतनी भ्रमि धीमती लोकचर्चिता ॥ ४८ ॥
प्रणवेशी परगतिः पारा वारसुता समा ।

डाकिनी शाकिनी द्रव्धा नीलनागांगना द्युतिः ॥ ४९ ॥
कुंदद्युतिः श्च कुरटा कांतिदा भ्रान्तिदा भ्रमा ।
चर्चिताऽर्चचिता गोष्ठो गजाननसमर्चिता ॥ ५० ॥
खगेश्वरी खनीला च नादिनी खगवाहिनी ।
चन्द्रानना महारुण्मा महोग्रा मीनकन्यका ॥ ५१ ॥
मानप्रदा महोरूपा महामाहेश्वरार्पिता ।
मरुद्गणा महावक्त्रा महोरगभयानका ॥ ५२ ॥
महाघोणा करेशाना मार्जारी मन्मथोज्ज्वला ।
कर्त्री हर्त्री पालयित्री चण्डमुण्डनिसूदिनी ॥ ५३ ॥
निर्मला भास्वती भीमा भद्रिका भीमविक्रमा ।
गंगा चन्द्रावती दिव्या गोमती यमुना नदी ॥५४॥
विपाशा सरयूस्तापी वितस्ता कुंकुमार्चिता ।
गडकी नर्मदा गोरी चन्द्रभागा सरस्वती ॥५५॥
ऐरावती च कावेरी शतह्रासा शतह्लदा ।
श्वेतवाहन सेव्या च श्वेतास्या स्मितभाषिणी ॥५६॥
कौशांबी कोशदा कोश्या काश्मीरी कनकेलिनी ।
कोमला च विदेहा च पूः पुरी पूरसूदिनी ॥५७॥
पौरोरवा पला पाला पीवरांगी गुरुप्रिया ।
पुरारिगृहिणी पूर्णा पूर्णरूपा रजस्वला ॥५८॥
संपूर्णचन्द्रवदना बालचन्द्रसमद्युतिः ।
रेवती प्रेयसी रेवा चित्रा चित्राम्बराचमूः ॥५९॥
नवपुष्पसमुद्भूता नवपुष्पैकहारिणी ।
नवपुष्पसमासीना नवपुष्पाकुलावना ॥६०॥
नवपुष्पोद्भवा प्रेता नव पुष्प समाश्रया ।
नवपुष्पललत्केशा नवपुष्पललन्मुखा ॥६१॥
नवपुष्पललत्कर्णा नवपुष्पललच्छविः ।
नवपुष्पललन्नेत्रा नव पुष्पललन्नसा ॥६२॥

नवपुष्प समाकारा नवपुष्प ललद्भुजा ।
नवपुष्पललत्कंठा नवपुष्पा चितस्तनी ॥६३॥
नवपुष्पललन्मध्या नवपुष्पकुलालका ।
नवपुष्पललन्नाभि नवपुष्पललद्भगा ॥६४॥
नवपुष्पललत्पादा नवपुष्प कुलांगिनी ।
नवपुष्पगुणोत्पीडा नवपुष्पोपशोभिता ॥ ६५ ॥
नवपुष्पप्रिया प्रेता प्रेतमंडलमध्यगा ।
प्रेतासना प्रेतगतिः प्रेतकुण्डलभूषिता ॥ ६६ ॥
प्रेतबाहुकरा प्रेतशय्या शयन शायिनी ।
कुलाचारा कुलेशानी कुलका कुलकौलिनी ॥ ६७ ॥
श्मशान भैरवी कालभैरवी शिवभैरवी ।
स्वयंभूभैरवी विष्णु भैरवी पुरभैरवी ॥ ६८ ॥
कुमारभैरवी बालभैरवी रुद्रभैरवी ।
शशांकभैरवी सूर्य भैरवी वह्नि भैरवी ॥ ६९ ॥
शोभादिभैरवी मायाभैरवी लोकभैरवी ।
महोग्रभैरवी साधुभैरवी मृतभैरवी ॥ ७० ॥
संमोहभैरवी शब्द भैरवी रसभैरवी ।
समस्तभैरवी देवभैरवी मन्त्रभैरवी ॥ ७१ ॥
सुन्दरांगी मनोहर्त्री महाश्मशान सुन्दरी ।
सुरेशसुन्दरी देवसुन्दरी लोकसुन्दरी ॥ ७२ ॥
त्रैलोक्यसुन्दरी ब्रह्म सुन्दरी विष्णु सुन्दरी ।
गिरीशसुन्दरी कामसुन्दरी गुणसुन्दरी ॥ ७३ ॥
आनन्दसुन्दरी वक्त्रसुन्दरी चन्द्रसुन्दरी ।
आदित्य सुन्दरी वीर सुन्दरी वह्निसुन्दरी ॥ ७४ ॥
पद्माक्षसुन्दरी पद्मसुन्दरी पुष्पसुन्दरी ।
गुणदा सुन्दरी देवी सुन्दरी परसुन्दरी ॥७५॥
महेशसुन्दरी देवी महात्रिपुर सुन्दरी ।

स्वयंभू सुन्दरी देवी स्वयंभू पुष्पसुन्दरी ।७६।।
शुक्रैक सुदशी लिंग सुन्दरी भगसुन्दरी ।
विश्वेन्द्र सुन्दरी त्रिद्यासुन्दरी कालसुन्दरी ।।७७।।
शुक्रेश्वरी महाशुक्रा शुक्रतर्पणतर्पिता ।
शुक्रोद्भवा शुक्ररसा शुक्रपूजनतोषिता ।। ७८ ।।
शुक्रात्मिका शुक्रकरी शुक्रस्नेहा च शुक्रिणी ।
शुक्रसेव्या सुराशुक्रा शुक्रलिप्ता मनोन्मना ।।७९।।
शुक्रहारा सदा शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रजा ।
शुक्रसूः शुक्ररम्यांगी शुक्राशुक विवर्धिनी ।।८०।।
शुक्रोत्तमा शुक्रपूजा शुक्रेशी शुक्रवल्लभा ।
शुक्र प्रिया शुक्ररता शुक्रमञ्जन तत्परा ।।८१।।
ज्ञानेश्वरी भगोत्तुंगा भगमालाविहारिणी ।
भगलिंगैकरसिका लिंगिनी भगमालिनी ।।८२।।
बैंदवेशी भगाकारा भगलिंगादिशुक्रसूः ।
वात्याली बिनता चाद्यारूपिणी मेघमालिनी ।।८३।।
गुणाश्रया गुणवती गुणगौरवसुन्दरी ।
पुष्पतारा महापुष्टिः पुष्टिः परमलध्वजा ।।८४।।
स्वयंभूपुष्प संकाशा स्वयंभू पुष्पपूजिता ।
स्वयभू कुसुमन्यासा स्वयंभू कुसुमार्चिता ।। ८५ ।।
अपान प्राणरूपा च व्यानोदान स्वरूपिणी ।
प्राणदा मदिवरामोदा मधुमती च मदोदिता ।। ८६ ।।
नारी पुष्प समप्राणा नारीपुष्पसमुत्सुका ।
नारी पुष्पलता नारी नारीपुष्प स्रुजार्चिता ।। ८७ ।।
षड्गुणा षड्गुणातीता षोडशीं शशिनः कला ।
चतुर्भुजा दशभुजा चाष्टा दशाभुजा तथा ।। ८८ ।।
द्विभुजा चैव षट्कोणा त्रिकोणा निलयाश्रया ।
स्रोतस्वती महादेवी महारौद्री दुरंतका ।। ८९ ।।

दीर्घनासा सुनासा च दीर्घजिह्वा च मौलिनी ।
सर्वाश्रया सर्वगुणा सर्वस्था सर्वतोमुखा ॥ ९० ॥
सर्वाधारा सर्वमयी सारसी सरलाश्रया ।
सहस्त्रनयन प्राणा सहस्त्राक्ष समर्चिता ॥ ९१ ॥
सहस्त्रशीर्षा सुभटा शुभेक्ष्या दक्षपुत्रिणी ।
सृष्टिका सृष्टिचक्रस्था षड्वर्गफलदायिनी ॥ ९२ ॥
अदिति र्दितिरात्मश्रीराद्या चाङ्गाभ चक्रिणी ।
भरणी भगबिम्बाक्षी कृत्तिका चेक्षुमादिता ॥ ९३ ॥
इन्दुश्री रोहिणी चेष्टिःचेष्टामृगशिरोधरा ।
ईश्वरी वाग्भवी चांद्री मालिनी मुनिसेविता ॥ ९४ ॥
उमा पुनर्जया जारा चोष्मा रुंधा पुनर्वसुः ।
ऋतुस्तिष्या तिमिस्तांती जाडिनी लिप्तदेहिनी ॥ ९५ ॥
लीढ़ा श्लेषतरा श्लिष्टा मघवार्चित पादुकी ।
मघा मोघा तथैणाक्षी ऐश्वर्यपददायिनी ॥ ९६ ॥
ऐंकारी चन्द्रमुकुटा पूर्वा फाल्गुणकीश्वरी ।
उत्तरा फल्गुणहस्ता हस्तिसेव्या समेक्षणा ॥९७॥
ओजस्विनी तथोत्साह्या चित्रिणी चित्रभूषणा ।
अंभोजनयना स्वातिः विशाखा जननी शिखा ॥९८॥
अः कारनिलयाधाराऽनूरुसेव्या च ज्येष्ठजा ।
मूला पूर्वा दिषाढेशी चोत्तराषाढपानना ॥९९॥
श्रवणा धर्मिणी धर्म्या धनिष्ठा च शतभिषक् ।
पूर्वभद्रपदस्थानाव्युत्तरा भद्रपालिनी ॥१००॥
रेवती रमणा स्तुत्या नक्षत्रेश समर्चिता ।
कन्दर्पदर्पिणी दुर्गा कुरुकुल्लकपोलिनी ॥१०१॥
केतकी कुसुमस्निग्धा केतकीकृतभूषणा ।
कालिका कालरात्रिश्च कुटुँबजनतर्पिता ॥१०२॥
कंजपत्राक्षिणी कल्परूपिणी कालपोषिता ।

कर्पूरपूर्णवदना कचभारनतानना ॥ १०३ ॥
कलानाथ कलामौलिः कला कलिमलापहा ।
कादम्बिनी करिगतिः करिचक्रसमर्चिता ॥ १०४ ॥
कुंजेश्वरी कृपारूपा करूणामृतवर्षिणी ।
खर्वा खद्योतरूपा च खेटेशी खड्गधारिणी ॥ १०५ ॥
खद्योतचंचला खेशो खेचरो खेचरार्चिता ।
गदाधरीशया गुर्वी गुरूपुत्री गुरुप्रिया ॥ १०६ ॥
गीत वाद्य प्रिया गाथा गजवक्त्रप्रसूः गतिः ।
गरिष्ठा गणपूज्या च गूढगुल्फा गणेश्वरी ॥ १०७ ॥
गणामान्या गणेशानी गाणपत्य फलप्रदा ।
घर्मांशुनयना घर्मा घोरा घुर्घुर नादिनी ॥ १०८ ॥
घटस्तनी घटाकारा घुसृणाकलितस्तनी ।
घोरा-रवा घोरमुखी घोर दैत्य निर्वर्हिणी ॥ १०९ ॥
घनच्छाया घनज्योतिः घनवाहन पूजिता ।
ङ॰ व काङे॰ शतरूपा चतुरा चतुरातुरी ॥ ११० ॥
चतुराननसंपूज्या चतुर्भुज समर्चिता ।
चर्माम्बरा चरमगतिः चतुर्वेदमयी चला ॥ १११ ॥
चतुः समुद्रशयना चतुर्दश सुरार्चिता ।
चकोर नयना चम्पा चंपका कुल कुंतला ॥ ११२ ॥
च्युता चीराम्बरा चारूमूर्तिः चम्पक मालिनी ।
छाया छद्मकरी छेली छेटिका छिन्नमस्तका ॥ ११३ ॥
छिन्नशीर्षा छिन्ननासा छिन्नवस्त्रावरूथिनी ।
छंदि छत्रा छत्रछाल्का छात्रमं त्रानुग्राहिणी ॥ ११४ ॥
छंदिनी छद्मनिरता छद्म सद्म निवासिनी ।
छाया सुतहरा हत्या छलरूप समुज्वला ॥ ११५ ॥
जया च विजया जेया जय मंडल मंडिता ।
जयनाथप्रिया जाप्या जयदा जयवर्धिनी ॥ ११६ ॥

ज्वालामुखी महाज्वाला जगत्त्राण परायणा ।
जगद्धात्री जगद्धर्त्री जगतामुपकारिणी ॥ ११७ ॥
जालंधरी जयंती च जंबारारति वर प्रदा ।
झिल्ली झंकारमुखरा झरी झर्झरिका तथा ॥ ११८ ॥
जनरूपा महाजेशाऽब्ज हस्ता ब्ज विलोचना ।
टंकार कारिणी टाका टिका टंका युधप्रिया ॥ ११९ ॥
कुरंगी टलगध्येया ठकार त्रयभूषणा ।
डामरी डमरू प्रीता डमरू प्रहितोन्मुखी ॥ १२० ॥
ढिल्ली ढकार वाचालाढ्य भूषा भूषिताननी ।
णां लाण वण संयुक्ता णेयाणेय विनाशिनी ॥ १२१ ॥
तुला-अक्षी त्रिनयना त्रिनेत्रवरदायिनी ।
तारा तारवया तुल्या तारा वर्ण समन्विता ॥ १२२ ॥
उग्रतारा महाघोरा तोतुलाऽतुल विक्रमा ।
त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्रिपुरांतक रोहिणी ॥ १२३ ॥
तन्त्रैक निलया त्र्यश्रा तुषारांबु कलाधरा ।
तपः प्रभावदा रूषा तपसा ताप हारिणी ॥ १२४ ॥
तुषारकरपूर्णास्या तुहिनाद्रिसुता तुषा ।
तालायुधा तार्क्षवेगा त्रिकूटा त्रिपुरेश्वरी ॥ १२५ ॥
थकाराकार निलया थाल्ली थल्ली थवर्णजा ।
दयात्मिका दीनरवा दुःख दारिद्रय नाशिनी ॥ १२६ ॥
देवेश देवजननी दशविद्या दयाश्रया ।
द्यु नदी दैन्य संहर्त्री दौर्भाग्यापद्विनाशिनी ॥ १२७ ॥
दक्षिणा कालिका दक्षा दक्षयज्ञ विनाशिनी ।
दानवाऽदानवेंद्राणी दांता दम्भ-विवर्जिता ॥ १२८ ॥
दधीचिवरदा दुष्टदैत्यदर्पापहारिणी ।
दीर्घनेत्रा दीर्घकचा दुष्टारपद संस्थिता ॥ १२९ ॥
धर्मध्वजा धर्ममयी, धर्मराजवरप्रदा ।

धनेश्वरी धनिस्तुत्या धनाध्यक्षा धनात्मिका ॥१३० ॥
धी धंनिर्धवलाकारा धवलाम्भोजधारिणी ।
धीरसूर्धरिणी धात्री धूर्धुनी च धनी तथा ॥ १३१ ॥
नवीना नूतना नव्या नलिनायत लोचना ।
नर नारायण स्तुत्या नागहार विभूषणा ॥ १३२ ॥
नवेन्दु संनिभा नम्रा नागकेसरमालिनी ।
नृवन्द्या नगरेशानी नयिका नायकेश्वरी ॥ १३३ ॥
निरक्षरा निरालम्बा निर्लोभा निरयोनिजा ।
नंदजानंगदर्याढ्या निकंदा नर मुंडिनी ॥१३४॥
नित्यानन्द फला नभ्यानन्दकर्मपरायणा ।
नरनारी गुण प्रीता नरमालाविभूषणा ॥ १३५ ॥
पुष्पायुधा पुष्पमाला पुष्पबाण प्रियंवदा ।
पुष्प बाणप्रियंकरी पुष्पधामविभूषिता ॥ १३६ ॥
पुण्यदा पूर्णिमा पूता पुण्यकोटिफलप्रदा ।
पुराणागमन्त्राढ्या पुराणपुरुषाकृति: ॥ १३७ ॥
पुराणगोचरा पूर्वा परंब्रह्मस्वरूपिणी ।
परापररहस्यात्मा प्रह्लाद्या परमेश्वरी ॥ १३८ ॥
फाल्गुणी फाल्गुणप्रीता फणिराज समर्चिता ।
फणप्रदा फणेशी च फणाकार फणोत्तमा ॥ १३९ ॥
फणिहारा फणिगति: फणिकांची फणाशना ।
बलदा बाल्यरूपा च बला अक्षरमन्त्रिता ॥ १४० ॥
ब्रह्मज्ञानमयी ब्रह्मावांछा ब्रह्मपदप्रदा ।
ब्रह्माणी बृंहति: ब्रीडा ब्रह्मावर्तं प्रवर्तिनी ॥ १४१ ॥
ब्रह्मरूपपरापूज्या ब्रह्ममुंडैकमालिनी ।
बिन्दुभूषा बिन्दुमाता बिम्बोष्ठी बगुलामुखी ॥ १४२ ॥
ब्रह्मास्त्रविद्या चेन्द्राक्षी ब्रह्माच्युत नमस्कृता ।
भद्रकाली सदाभद्रा भीमेशी भुवनेश्वरी ॥ १४३ ॥
भैरवाकारकल्लोला भैरवी भैरवार्चिता ।

मानवी भास्वदम्भोजा भास्वदास्या भयार्तिहा ॥ १४४ ॥
क्रीडा भागीरथी भद्रा स्वभद्रा भद्रवर्धिनी ।
महामाया महाशांता मातङ्गी मीनतर्पिता ॥ १४५ ॥
मोहकाहारसंस्तुत्या मानिनी मानवर्धिनी ।
मनोज्ञशकुली कर्णा मायिनी मधुराक्षरा ॥ १४६ ॥
मायाबीजवती मानी मारीभय निसूदिनी ।
माधवानन्दा माध्वी मदिरारुणलोचना ॥ १४७ ॥
महोत्साहगुणोपेता माननीया महर्षिभिः ।
मत्तमातंगगा मत्त मन्मथारि वरप्रदा ॥ १४८ ॥
मयूरकेतुजयिनी मन्त्रराजविभूषिता ।
यक्षिणी योगिनी योग्या याज्ञिका योगवत्सला ॥ १४९ ॥
यशोवती यशोधात्री यज्ञभूतदयापरा ।
यमस्वसा यमस्त्री च यजमानवरप्रदा ॥ १५० ॥
राज्ञी रात्रिचरघ्नी च राक्षसी रसिका रसा ।
रजोवती रतिष्ठात्री राजमांतगिनी परा ॥ १५१ ॥
राजराजेश्वरी राज्ञा रसास्वाद विचक्षणा ।
ललना नूतनाकारा लक्ष्मीनाथ समर्चिता ॥ १५२ ॥
लक्ष्मी च सिद्धलक्ष्मी च महालक्ष्मी ललद्रसा ।
लवंगी कुसुमप्राता लवङ्गफल तोषिता ॥ १५३ ॥
लाक्षारुणा ललन्या च लांगूलि वरदायिनी ।
वातात्मजप्रिया वीर्या वीरदा वानरेश्वरी ॥ १५४ ॥
विज्ञान कारिणी वेणा वाग्देवी वर धीरदा ।
विद्यावती वैद्यमाता विद्या हार विभूषणा ॥ १५५ ॥
विष्णुवक्षःस्थलस्था च वामदेवांगवासिनी ।
वामाचारप्रिया वल्लीविवस्वत्सोमदायिनी ॥ १५६ ॥
शारदा शारदाम्भोजधारिणी शूलधारिणी ।

शशांकमुकुटा शिष्या शेषशायिनमस्कृता ॥ १५७॥
श्यामा श्यामाम्बरा श्याममुखी श्रीपतिसेविता ।
षोडशी षड्रसा षड्गाषडानन प्रियंकरी ॥ १५८॥
षडंघ्रिकूजिता षष्ठिः षोडशस्वरभूषिता ।
षोडषाराब्जनिलया षोडशी षोडशाक्षरी ॥ १५९॥
सौं बीज मण्डिता सर्वा सर्वगा सर्वरूपिणी ।
समस्तनरकत्राता समस्तदुरितापहा ॥ १६०॥
सम्पत्करी महासंम्पत्सर्वदा सर्वतोमुखा ।
सूक्ष्माकारा सती सीता समस्तभुवनाश्रया ॥ १६१॥
सर्वसंस्कार सम्पत्तिः सर्वसंस्कारवासना ।
हरप्रिया हरिस्तुत्या हरिवाहा हरेश्वरी ॥ १६२॥
हालाप्रिया हलिमुखी हारकेशी हृदोश्वरी ।
ह्लीं बीजवर्णमुकुटा हरीश प्रिय कारणी ॥ १६३॥
क्षमा क्षांता च क्षोणी च क्षेत्रियी मन्त्ररूपिणी ॥ १६४॥
पचात्मिका पचवर्णा पंक्तिघ्नांशुभेदिनी ॥ १६५॥
मुक्तिदा मुनिवर्गेशी शांडिल्यवरदायिनी १६६ ॥
ॐ ह्लीं एं ह्लीं च पंचार्णा देवता श्री सरस्वती ॥१६७॥
ॐ सौं ह्लीं श्रीं शरद्बीज शीर्षा नीलसरस्वती ॥ १६८॥
ॐ ह्लीं क्लीं सः नमो ह्लीं ह्लीं स्वाहा बीजा च शारदा ॥ १६९॥
ॐ श्री शारदानाम्नां सहस्रं भैरवोदितम् (श्री शारदार्पणमस्तु)।

अथ फल श्रुति :-

गुह्य मन्त्रात्मकं पुण्यं सर्वस्वं त्रिदिवौकसाम् ।
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥ १ ॥
दिवा रात्रौ च संध्यायां प्रभाते च सदा शिवः ।
गोगजाश्वरथैः पूर्णं गेहं तस्य भविष्यति ॥ २ ॥
दासी दास जनैः पूर्णं पुत्रपौत्र समाकुलम् ।
श्रेयस्करं सदा देवीसाधकानां यशस्करम् ॥ ३ ॥
पठेन्नाम्नां सहस्रं तु निशीथे साधकोत्तमः ।

सर्वरोग प्रशमनं सर्वदारिद्रय नाशनम् ॥ ४ ॥
पापरोगादि दष्टानां सजीवनमलं परम् ।
यः पठेच्छक्तियुक्तस्तु मुक्तकेशो दिगम्बरः ॥ ५ ॥
सर्वागमे स पूज्यः स्यात्स विष्णुः स महेश्वरः ।
बृहस्पति समो वाचा नीत्या शंकर सन्निभः ॥ ६ ॥
गत्या पवन संकाशो सत्या शुक्रसमोऽपि च ।
तेजसादित्य सद्दशो रूपेण मकरध्वजः ॥ ७ ॥
ज्ञानेन च शुको देवर्चायुषा भृगुनन्दनः ।
स साक्षात् परमेशानि प्रभुत्वेन सुराधिपः ॥ ८ ॥
विद्यया धिषणः कीर्त्या रामो रामो बलेन च ।
स दीर्घायुः सुखी पुत्री विजये विभवे विभुः ॥ ९ ॥
नान्य चिंता प्रकर्तव्या नान्य चित्तः कदाचन ।
वातस्तंभं जलस्तंभं चोरस्तभं महेश्वरि । १० ॥
वह्नेः शैत्यं करोत्येवं पठनं चास्य सुन्दरि ।
स्तंभयेदपि ब्रह्माणं मोहयेदपि शंकरम् ॥ ११ ॥
वशयेदपि राजानं शमयेद् हव्यवाहनम् ।
आकर्षयेद् देव कन्या रुच्याटयति वैरिणम् ॥ १२ ॥
मारयेदपि की नाशं वशयेच्च चतुर्भुजम् ।
किं किं न साधयत्येवं मन्त्र नाम सहस्त्रकम् ॥ १३ ॥
शरत्काले निशीथे च भौमे शक्ति समन्वितः ।
पठेन्नामसहस्त्रं च साधकः किं न साधयेत् १४ ॥
अष्टम्यां आश्वमासे च मध्याह्ने मूर्तिसन्निधौ ।
पठेन्नाम सहस्त्रं तु मुक्तकेशो दिगम्बरः ॥ १५ ॥
सुदर्शनो भवेदाशु साधकः पर्वतात्मजे ।
अष्टम्यांमर्धरात्रे तु कुंकुमेन च चंदनैः ॥ १६ ॥
रक्तचन्दनयुक्तेन कर्पूरेण यावकैः ।
मृगनाभि मनः शिला कल कयुक्तेन वारिणा ॥ १७ ॥

लिखेद्भूर्जे जपेन्मंत्रं साधको भक्तिपूर्वकम् ।
धारयेन् मूर्ध्नि वा वाहौ योषिद वाम करे शिवे ॥ १८ ॥
रणे रिपून् विजित्याशु मातंगा निव केसरी ।
स्वगृहं तूर्णमायाति कल्याणो साधकोत्तमः ॥ १९ ।
वन्ध्या वाम भुजे धृत्वा चतुर्थेऽहनि पार्वति ।
अमावस्यां रविवारे पठेत् प्रेतालये तथा ॥ २० ॥
त्रिवार साधको देवि भवेत् स कविरीश्वरः ।
सक्रांतौ ग्रहणे वापि पठेन्मन्त्री नदी तटे॥ २१ ॥
स भवेत् सर्वशास्त्रज्ञो वेदवेदांग तत्त्ववित् ।
शारदायाः इदं नाम्नां सहस्रं मन्त्रगर्भकम् ॥२२॥
गोप्य गुह्यं सदा गोप्यं सर्वधर्मैकसाधनम् ।
मन्त्रकोटिमय देवि तेजो रूपं परात्परम् ॥२३॥
अष्टम्यां च नवम्यां च चतुर्दश्यां शनेर्दिने ।
संक्रांतौ मंगले रात्र्यां योऽचयेच्छारदां सुधोः ॥२४॥
त्रयस्त्रिंशति कोटीनां देवतानां महेश्वरि ।
ईश्वरी शारदा तस्य मातेव हितकारिणी ॥२५॥
यो जपेत् पठते नाम्नां सहस्रं मनसा शिवे ।
स भवेच्छारदापुत्रः साक्षाद् भैरव सन्निभः ॥२६॥
इदं नाम्नां सहस्रं तु कथितं हितकाम्यया ।
अस्य प्रभावमतुलं जन्मजन्मान्तरेष्वपि ॥२७॥
न शक्यते मयाख्यातुं कोटिशो वदनैरपि ।
अदातव्यमिदं देवि दुष्टायामितभाषिणे ॥२८॥
अकुलीनाय दुष्टाय दीक्षाहीनाय सुन्दरि ।
अवक्तव्यमश्रोतव्यमिद नाम्नां सहस्रकम् ॥२९॥
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो न दातव्यं कदाचन ।
शांताय गुरुभक्ताय कुलीनाय महेश्वरि ॥३०॥

स्वशिष्याय प्रदातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ।
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ।।३१।।
गोप्यं गुह्य च गोप्तव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।।३२।।
इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे श्री शारदाभगवती नामसहस्रस्तवराजः सम्पूर्णः समाप्तः ।

श्रीशारदार्पणमस्तु

१ भैरव भैरवी संवादश्लोकाः = ११
२ मूलपाठ श्लोकाः = १६६
३ फलश्रुतिश्लोकाः = ३१
४ ऋष्यादि न्यासः
५ करन्यासः
६ हृदयादिन्यासः

नोट :-

१ श्री शारदा सहस्रनाम का पाठ करने के बाद इति, समाप्त आदि शब्दों का बोलना वर्जित है ।

२ हमारे कुछ सहयोगियों का विचार है कि इसमें सहस्र से अधिक नाम हैं । अतः सहस्र की सीमा ही क्यों । बन्धुओ, वास्तव में संहस्रं शब्द का प्रयोग बड़े चमत्कार पूर्ण ढंग से यहां रखा गया है । इसका मतलब बहुलता से भी संगति रखता है । कुछ अधिकता से भी सहस्रं की यहत्ता में कोई विसंगति नहीं हैं ।

प्रकाशक

ॐ शारदा वरदा देवी मोक्षदात्री सरस्वती
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।